22 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

राज्यसत्ता और धर्मसत्ता के
अधिकारी पन का अनुभव

➢➢ मैं संगम युगी ब्राह्मण आत्मा हूं

➳ _ ➳ मैं तपस्या लीन ब्राह्मण आत्मा हूँ

➳ _ ➳ यह तपस्या है

→ स्वराज्य प्राप्त करने के लिए

→ भविष्य राज्य के संस्कार

■ स्वयं में आत्मा में भरने के लिए

➢➢ मैं राज्य वंश की निशानियां स्वयं में चेक करती हूं

➳ _ ➳ क्या अधीनता के संस्कार समाप्त हो गए हैं

➳ _ ➳ क्या अधिकारी पन के संस्कार इमर्ज हो रहे हैं

➳ _ ➳ मैं आत्मा अथॉरिटी स्वरूप हूं

→ हर शक्ति को

→ स्थूल शक्ति को सूक्ष्म शक्ति को

■ जब चाहे जैसे चाहे चलाती हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा नियम स्वरूप हूं

→ हर कार्य को लॉ एंड ऑर्डर द्वारा ही चलाती हूं

➳ _ ➳ मैं संपन्न हूं

➳ _ ➳ सर्व प्राप्ति स्वरूप हूं

→ सुख शांति के खजाने से

→ आनंद प्रेम के खजाने से

→ सर्व गुणों के खजाने से संपन्न हूं

→ मैं स्वयं संपन्न बन

■ सब को सर्वगुण संपन्न बना रही हूं

➳ _ ➳ मैं परमात्म प्यार में पलने वाली आत्मा

→ मास्टर पालनहार हूं

→ सर्व आत्माओं के लिए मात पिता स्वरूप हूं

→ हर आत्मा मेरे लिए एक बच्चा है

■ परमात्म प्रेम अथाह प्रेम

■ हर आत्मा तक पहुंच रहा है

■ निर्बल आत्मा शक्ति स्वरूप बन रही हैं

■ जीवन की मंजिल तक पहुंचने की हिम्मत मिल रही है

■ हर आत्मा योग्य बन रही है

➳ _ ➳ मेरा स्व के ऊपर राज्य

→ सदा अटल है

→ अखंड है

■ मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूं

■ मैं राज्य अधिकारी आत्मा हूं

➢➢ मैं आत्मा चेक करती हूं अपनी धारणाओं को

➳ _ ➳ क्या मैं धारणा स्वरूप बनी हूँ

➳ _ ➳ क्या मैं स्वयं के अंदर

→ हर धारणा की शक्ति अनुभव कर रही हूं

➳ _ ➳ प्रथम धारणा है पवित्रता

→ पवित्रता पिलर है आधार है

- जिसने इस सृष्टि को थामा हुआ है

→ मैं पवित्र आत्मा

→ पवित्रता के सागर शिव बाबा की

- पवित्र किरणें स्वयं में समाकर
- हर आत्मा तक पहुंचा रही हूं

→ मैं स्वयं बंधन मुक्त हो

- सर्व आत्माओं को
- अनेक जन्मों के बंधन से आजाद कर रही हैं

→ पवित्रता की शक्ति

- विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को
- शीतलता का अनुभव करा रही हैं
- इस दुनिया को परिवर्तन कर रही हैं

→ हरगुण की धारणा

→ हरगुण की विशेषता

- मुझ में समा गई है

→ इन धारणाओं में परिवर्तन शक्ति है

- हर परिवर्तन सहज हो रहा है

→ धारणाओं की शक्ति ने

- मुझे परिपक्व बना दिया है

→ मैं हर अपोजिशन में अचल हूं

→ मैं सदा के लिए परम पूज्य बन रही हूं

→ मैं अखंड पवित्र हूँ

→ मैं धारणा स्वरूप हूं

→ मैं धर्म सत्ता की अधिकारी हूं

➢➢ मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मेरे अधीनता के संस्कार

→ परिवर्तन हो गए..,

➳ _ ➳ अधिकारीपन के संस्कार

→ इमर्ज हो गए हैं

➳ _ ➳ राज्य सत्ता के संस्कार भर गये हैं

➳ _ ➳ मैं हर धारणा की शक्ति अनुभव कर रही हूं

➳ _ ➳ मैं राज्यसत्ता और धर्मसत्ता की अधिकारी आत्मा हूँ